सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 11 ● अंक: 323 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार 31 दिसम्बर, 2025
मूल्य ₹ 3/-

बीस साल की उम्र में इंसान अपनी इच्छा से चलता है, तीस में बुद्धि से और चालीस में अपने अनुमान से।
-बेंजामिन फ्रैंकलिन

भारत ने जीत के साथ किया साल... 7 | दक्षिण में नेताओं के बयान से... 3 | भाजपा राज में जातीय गुंडई... 2

महायुति गठबंधन में एक और बड़ा छेद

बीएमसी चुनाव : एक दिन पहले अठावले ने दिया 440 वोल्ट का झटका

» महाराष्ट्र की जान बीएमसी चुनाव में आरपीआई अकेली लड़ेगी चुनाव
» टिकट बटवारे को लेकर फडणवीस पर विश्वासघात का आरोप
» महायुति में शामिल होने से किया इंकार

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

मुंबई। बीएमसी चुनाव से ठीक एक दिन पहले महाराष्ट्र की सियासत में ऐसा करंट दौड़ा है कि महायुति के तार चटकते नजर आने लगे। केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले ने वह कर दिखाया जिसकी आशंका तो थी लेकिन समय ऐसा चुना गया कि बीजेपी और उसके सहयोगियों के लिए यह 440 वोल्ट का झटका बन गया।

रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया ने ऐलान कर दिया कि वह बीएमसी चुनाव अकेले लड़ेगी। जिस बीएमसी को महाराष्ट्र की राजनीतिक जान कहा जाता है उसी चुनाव में महायुति की एक अहम सहयोगी पार्टी का अलग राह चुनना केवल सीट बंटवारे का विवाद नहीं बल्कि सत्ता के अहंकार गठबंधन की विश्वसनीयता और बीजेपी के भीतर बढ़ते तनाव का खुला एक्सपोजर है।

झटका अभी खत्म नहीं

रामदास अठावले का यह फैसला सिर्फ एक चुनावी रणनीति नहीं है बल्कि सत्ता के समीकरणों पर करारा प्रहार है। बीएमसी चुनाव से ठीक पहले आया यह झटका महायुति को झकझोरने के लिए काफी है। अब देखना यह है कि बीजेपी इस संकेत को चेतावनी मानती है या अनदेखा करती है। क्योंकि अगर सहयोगियों का यह असंतोष बढ़ता गया तो बीएमसी के बाद महाराष्ट्र की राजनीति में और भी बड़े राजनीतिक विस्फोट देखने को मिल सकते हैं।

बीएमसी चुनाव सत्ता का एटीएम और राजनीतिक प्रयोगशाला

बीएमसी चुनाव किसी भी दल के लिए सिर्फ नगर निकाय चुनाव नहीं है। यह देश की सबसे अमीर नगर पालिका है जहां हजारों करोड़ का बजट है, ठेके हैं, परियोजनाएं है, और शहरी सत्ता का सीधा नियंत्रण। जो बीएमसी जीतता है वही मुंबई की नब्ज पर हाथ रखता है। यही वजह है कि बीजेपी के लिए बीएमसी प्रतिष्ठा का सवाल है। शिवसेना (उद्धव गुट) के लिए अस्तित्व की लड़ाई, शिंदे गुट के लिए वैधता की परीक्षा, और कांग्रेस-एनसीपी के लिए वापसी का रास्ता। ऐसे में आरपीआई का अलग होकर लड़ना गणित ही नहीं मनोविज्ञान भी बदल देता है।

अठावले ने कहा विश्वासघात हुआ है

केन्द्रीय मंत्री रामदास अठावले ने जो शब्दावली का इस्तेमाल किया है वह अमूमन नहीं करते। उन्होंने सीधे सीएम फडणवीस पर विश्वासघात का आरोप लगाया है। उनका यह बयान सिर्फ नाराजगी नहीं था वह चेतावनी थी। उन्होंने कहा कि भाजपा और शिंदे गुट ने हमें सात सीटें देने का वादा किया था। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने स्पष्ट निर्देश दिए थे कि आरपीआई को भाजपा के कोटे से सीटें दी जाएं। लेकिन जमीनी स्तर पर कुछ नहीं हुआ। हमारी पार्टी को अंत तक लटकाए रखा गया। यह विश्वासघात है। अठावले का यह आरोप महज भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं है। यह महायुति के अंदर चल रहे उस खेल की ओर इशारा करता है जहां छोटे दलों को चुनाव के वक्त तक इंतजार की राजनीति में उलझाए रखा जाता है और आखिरी समय पर दरवाजा बंद कर दिया जाता है।

ऐन मौके पर पेंच फंसाया

नामांकन की समय सीमा खत्म होने से कुछ घंटे पहले आरपीआई ने 39 उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी। यह सूची केवल उम्मीदवारों के नाम की नहीं थी बल्कि बीजेपी लीडरशिप के लिए एक राजनीतिक चार्जशीट थी। आरपीआई ने उत्तरी, उत्तर-मध्य, उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्वी मुंबई यानी वह इलाके जहां दलित वंचित और मेहनतकश तबका निर्णायक भूमिका निभाता है से सीधा मोर्चा खोल दिया है।

दलित राजनीति का बदलात मूड!

रामदास अठावले कोई हाशिये के नेता नहीं हैं। दलित राजनीति में उनकी एक स्वतंत्र पहचान है। बीएमसी चुनाव में आरपीआई का अलग लड़ना दलित वोट बैंक को यह संदेश देता है कि पार्टी अब सिर्फ सहयोगी बनकर संतुष्ट नहीं रहेगी। पार्टी नेताओं का मानना है कि अगर हमें सिर्फ पोस्टर लगाने और रैली में भीड़ जुटाने के लिए याद किया जाएगा तो यह स्वीकार्य नहीं है। दलित समाज की राजनीतिक हिस्सेदारी चाहिए सिर्फ प्रतीकात्मक सम्मान नहीं। यह बयान सीधे-सीधे बीजेपी की सामाजिक इंजीनियरिंग पर सवाल खड़ा करता है।

महायुति के लिए कितना बड़ा नुकसान?

राजनीतिक तौर पर देखें तो आरपीआई का अलग लड़ना वोटों के बंटवारे का खेल बदल सकता है। खासकर उन वार्डों में जहां मुकाबला कांटे का है वहां आरपीआई के उम्मीदवार बीजेपी या

शिंदे गुट के समीकरण बिगाड़ सकते हैं। एक वरिष्ठ चुनाव रणनीतिकार के मुताबिक बीएमसी जैसे चुनाव में 1-2 प्रतिशत वोट भी हार-जीत तय कर देता है। आरपीआई का अलग रहना महायुति के लिए साइलेंट किलर साबित हो सकता है।

मोहभंग की शुरुआत?

सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या सहयोगी दलों की बीजेपी से मोहभंग की शुरुआत हो चुकी है? क्या सहयोगी दल अब खुलकर अपनी शर्तों पर राजनीति करना चाहते हैं? अठावले के फैसले ने यह साफ कर दिया है कि छोटे और मध्यम दल अब मजबूरी का गठबंधन नहीं मजबूती का गठबंधन चाहते। वे सम्मानजनक हिस्सेदारी चाहते हैं वरना अलग रास्ता चुनने से नहीं हिचकेंगे। आरपीआई के इस कदम से विपक्ष को बैठे बिठाए मुद्दा मिल गया है। उद्धव ठाकरे गुट और कांग्रेस पहले ही कह रहे हैं कि महायुति अवसरवादी गठबंधन है जहां भरोसे की कोई जगह नहीं।

बीजेपी कुनबे में बढ़ रहा है क्लेश?

आरपीआई का यह फैसला अकेली घटना नहीं है। महाराष्ट्र में महायुति के भीतर पहले से ही असंतोष की चिंगारियां सुलग रही हैं। शिंदे गुट और बीजेपी के बीच सीटों को लेकर तनातनी अजित पवार गुट की अनिश्चित निष्ठा और अब अठावले की खुली बगावत यह सब संकेत हैं कि गठबंधन बाहर से भले मजबूत दिखे लेकिन भीतर से उसकी चूलें दरकना शुरू हो चुकी हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बीजेपी का वन साइज फिट्स ऑल मॉडल अब सहयोगी दलों को खटकने लगा है। चुनाव जीतने के बाद सहयोगियों की भूमिका सीमित कर दी जाती है यह शिकायत अब बंद कमरों से निकलकर सार्वजनिक मंच पर आ रही है।

भाजपा राज में जातीय गुंडई चरम पर

सपा का सवाल सीएम योगी कैसे नकारेंगे, पूर्व सांसद धनंजय सिंह के करीबी ने किया कब्जा

» लखनऊ में पूर्व सांसद समेत 10 पर एफआईआर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के सुशांत गोल्फ सिटी थाना क्षेत्र स्थित स्वास्तिका सिटी में सड़क पर अतिक्र मण और अवैध निर्माण को लेकर उठा विवाद अब बड़े कानूनी मोड़ पर पहुंच गया है। मामले में पूर्व सांसद धनंजय सिंह, जौनपुर के महराजगंज से ब्लॉक प्रमुख मांडवी सिंह के पति विनय सिंह, उनके सरकारी गनर समेत 10 अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। उधर इस मामले में सियासत भी प्रारंभ हो गई है।

सपा ने मामले में भाजपा व योगी सरकार पर जमकर हमला बोला है। सपा ने कहा कि भाजपा की सरकार है तो मुख्यमंत्री की जाति के करीबी उत्पात मचा रहे हैं। वीआईपी कालोनी में सत्ता से जुड़े लोग सार्वजनिक जगहों पर कब्जा कर रहे हैं और पीड़ितों पर ही एफआईआर हो रही है। भाजपा राज में जो जातीय गुंडई हो रही है उसे सीएम योगी कै से नकारेंगे।

थाना प्रभारी उपेंद्र सिंह को लाइन हाजिर

वीडियो वायरल होने और मामले के तूल पकड़ने के बाद पुलिस विभाग हरकत में आया। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ जमीन कब्जाने, धमकी देने और एससी/एसटी एक्ट सहित अन्य गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इससे पहले लापरवाही के आरोपों में थाना प्रभारी उपेंद्र सिंह को लाइन हाजिर किया जा चुका है।

20 फुट चौड़ी सार्वजनिक सड़क पर अतिक्रमण का आरोप

यह पूरा विवाद स्वास्तिका सिटी की 20 फुट चौड़ी सार्वजनिक सड़क पर कथित अतिक्र मण और दीवार निर्माण को लेकर सामने आया। आरोप है कि निर्माण कार्य के दौरान विनय सिंह ने पूर्व सांसद धनंजय सिंह का नाम लेकर स्थानीय निवासियों को धमकाया। इससे इलाके में तनाव की स्थिति बन गई। पीड़ित पक्ष का कहना है कि सार्वजनिक रास्ते को अवरुद्ध कर दबाव के बल पर निर्माण कराया जा रहा था। विरोध करने पर उन्हें डराया-धमकाया गया।

पुलिस की भूमिका पर उठे सवाल

विवाद के शुरुआती दौर में पुलिस की भूमिका भी सवालों के घेरे में आ गई थी। आरोप है कि सुशांत गोल्फ सिटी थाने के तत्कालीन एसएचओ उपेंद्र सिंह ने पीड़ित पक्ष के खिलाफ ही मामला दर्ज कर लिया था, जिससे स्थानीय लोगों में नाराजगी फैल गई।
पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले की निष्पक्ष और तथ्यात्मक जांच की जा रही है। अतिक्र मण, धमकी और कथित जातिसूचक उत्पीड़न से जुड़े आरोपों की गहन जांच की जाएगी। आवश्यकता पड़ने पर अन्य धाराएं भी जोड़ी जा सकती हैं।

भाजपा वाले शकुनि व दुशासन की तरह: ममता बनर्जी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केंद्रीय मंत्री अमित शाह पर करारा जवाब दिया, जिन्होंने टीएमसी सरकार की तुलना भय और भ्रष्टाचार से की थी और उन पर सीमा बाड़ लगाने के लिए जमीन देने से इनकार करने का आरोप लगाया था।

» बंगाल सीएम का शाह पर तीखा हमला

ममता बनर्जी ने जवाब में भाजपा नेताओं की तुलना महाभारत महाकाव्य के पौराणिक पात्रों दुर्योधन और दुशासन से की। शाह के आरोपों का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि टीएमसी सरकार ने पेट्रापोल और अंडाल में बाड़ लगाने के लिए जमीन दी थी।

एक जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि 14 साल पहले की स्थिति याद कीजिए, लोग डरे हुए थे। बांकुरा के लिए बहुत विकास कार्य किए गए और जल संकट को दूर करने के लिए बहुत कुछ किया गया। चुनाव आ गए हैं और एसआईआर के नाम पर लोगों को परेशान किया जा रहा है। टीएमसी नेता ने आगे कहा कि बंगाल में दुशासन आ गया है। चुनाव आते ही दुशासन और दुर्योधन प्रकट होने लगते हैं। यह शकुनी का शिष्य दुशासन है, जो सूचना जुटाने आया है। आज वे कह रहे हैं कि ममता बनर्जी ने जमीन नहीं दी। अगर मैंने जमीन नहीं दी होती तो क्या होता? पेट्रापोल में जमीन किसने दी? आंदल में जमीन किसने दी? जबकि केंद्रीय मंत्री शाह ने कहा कि पश्चिम बंगाल की सीमा से घुसपैठ राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा है, ममता बनर्जी ने पलटवार करते हुए कहा कि वे कहते हैं कि प्रवासी केवल बंगाल से आते हैं। अगर ऐसा है, तो क्या आपने पहलगाम में हमला करवाया था? दिल्ली में हुई घटना के पीछे कौन था? भ्रष्ट भाजपा पार्टी। वे सर के नाम पर लोगों को परेशान कर रहे हैं। केवल आप और आपका बेटा खाएंगे, और हम उपदेश सुनते रहेंगे। पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची का विशेष गहन संशोधन और प्रवासियों का आगमन गरमागरम मुद्दे बन गए हैं, जिन्हें राज्य में आगामी 2026 विधानसभा चुनावों में मुद्दा बनाया जा सकता है।

पुलवामा हमला बीजेपी की साजिश: सनातन पांडेय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बलिया। उत्तर प्रदेश स्थित बलिया में समाजवादी पार्टी के सांसद सनातन पांडेय ने टाउन हॉल में आयोजित एक विशेष मतदाता पुनिरीक्षण शिविर को संबोधित करते हुए पुलवामा हमला को भारतीय जनता पार्टी की साजिश बताया दिया। सपा सांसद ने कहा कि 2019 के चुनाव में पूरे हिन्दुस्तान का मूड बना हुआ था, देश से भारतीय जनता पार्टी को हटाना है ,और गैर भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस की हुकुमत या साथी दलों की सत्ता बनानी है। उस समय उन्होंने पुलवामा कांड कराने का काम किया था।

पुलवामा किसी विदेशी साजिश के तहत नहीं हुआ था। पुलवामा भारत के प्रधानमंत्री तथा उनके सहयोगियों के द्वारा कूटनीति के तहत आपको भरमाने के लिए किया गया था। लोगों का दिमाग डाइवर्ट कर दिया गया था। बता दें वर्ष 2019 में लोकसभा चुनाव के ऐलान से करीब एक महीने पहले 14 फरवरी को जम्मू और कश्मीर में सीआरपीएफ के काफिले पर हमला हुआ था। जिसमें 40 जवान शहीद हुए थे। सीआरपीएफ के जवानों पर जब यह हमला हुआ था, उस वक्त जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर-नेशनल हाईवे के जरिए केंद्रीय रिजर्व सुरक्षा बल का काफिला जम्मू से श्रीनगर की ओर जा रहा था।

पूरे राज्य में अपने समर्थन को आंकेंगे स्टालिन

» तमिलनाडु में चुनाव से पहले घर-घर होगा सर्वे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। आगामी विधानसभा चुनावों से पहले एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक प्रक्रिया के तहत, तमिलनाडु सरकार ने राज्य भर में लगभग 1.91 करोड़ परिवारों का सर्वेक्षण करके अपनी कल्याणकारी योजनाओं के व्यापक प्रभाव का आकलन करने का निर्णय लिया है। विभिन्न सरकारी पहलों की पहुंच और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से किया जाने वाला यह व्यापक सर्वेक्षण नए साल से शुरू होकर 12 दिनों तक चलेगा।

यह सर्वेक्षण स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के 55,706 सदस्यों द्वारा किया जाएगा, जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में जाकर घरेलू स्तर पर डेटा एकत्र करेंगे। इस पहल का समन्वय लोक कल्याण विभाग (मुधलवरिन मुगावरी) द्वारा किया जा रहा है और इससे जमीनी स्तर पर सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों तक पहुंचने की व्यापक तस्वीर मिलने की उम्मीद है। विभाग की सचिव रीता हरीश ठक्कर द्वारा जारी एक सरकारी आदेश के अनुसार, सर्वेक्षण तमिलनाडु ई-गवर्नेंस

एजेंसी (टीएनईजीए) द्वारा बनाए गए लाभार्थी डेटाबेस का उपयोग करके कल्याणकारी कार्यक्रमों के वितरण और प्रभाव का आकलन करेगा। विभाग की सचिव रीता हरीश ठक्कर द्वारा जारी एक सरकारी आदेश के अनुसार, यह सर्वेक्षण तमिलनाडु ई-गवर्नेंस एजेंसी (टीएनईजीए) द्वारा बनाए गए लाभार्थी डेटाबेस का उपयोग करके कल्याणकारी कार्यक्रमों के कार्यान्वयन और प्रभाव का आकलन करेगा। एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण बाद में नीति कार्यान्वयन को बेहतर बनाने और सेवा वितरण में कमियों की पहचान करने के लिए किया जाएगा। इस प्रक्रिया की निगरानी के लिए एक उच्च स्तरीय निगरानी समिति का गठन किया गया है। समिति में ग्रामीण विकास और राजस्व विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के प्रधान सचिव, टीएनईजीए के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और तमिलनाडु महिला विकास निगम (टीएनसीडीडब्ल्यू) के प्रबंध निदेशक शामिल हैं। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, तमिलनाडु में कुल 2.26 करोड़ राशन कार्ड हैं, जिनमें से 89.03 लाख शहरी क्षेत्रों में और 1.37 करोड़ ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। इनमें से 1.57 करोड़ परिवार वर्तमान में एक या अधिक कल्याणकारी लाभ प्राप्त कर रहे हैं। सर्वेक्षण में राज्य भर के लगभग 1.90 करोड़ परिवारों को शामिल किए जाने की उम्मीद है। सरकार ने इस कार्य के लिए 43.52 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं, जिसमें से 21 करोड़ रुपये तमिलनाडु जनित पशु एवं परिवार कल्याण संगठन (टीएनसीडीडब्ल्यू) के लिए निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य को प्रतिदिन 30 परिवार आवंटित किए जाएंगे और उन्हें 12 दिनों की सर्वेक्षण अवधि के लिए 6,000 रुपये का पारिश्रमिक दिया जाएगा।

राज ठाकरे ने 53 प्रत्याशियों का किया ऐलान

» एक उत्तर भारतीय और दो मुस्लिम उम्मीदवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) ने 2026 के मुंबई नगर निगम चुनावों के लिए अपने 53 उम्मीदवारों की सूची जारी की। इस चुनाव में एमएनएस और शिवसेना ठाकरे गुट गठबंधन में हैं। सूची में एक उत्तर भारतीय और दो मुस्लिम उम्मीदवार शामिल हैं। बाकी सभी उम्मीदवार मराठी भाषी हैं। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना द्वारा घोषित 53 उम्मीदवारों की सूची में समावेशिता पर जोर दिया गया है।

इस सूची में महिला उम्मीदवारों का दबदबा स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कुल 53 उम्मीदवारों में से 29 महिलाएं हैं, जबकि 24 पुरुष उम्मीदवार हैं। राज ठाकरे ने आधी से अधिक सीटों पर महिलाओं को अवसर देकर एक बड़ा राजनीतिक संदेश दिया है। श्रेणीवार देखें तो सामान्य वर्ग से 36 उम्मीदवारों की घोषणा की गई है, जिनमें 20 महिलाएं और 16 पुरुष शामिल हैं। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने सूची में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है। कुल 13 ओबीसी उम्मीदवारों को टिकट मिले हैं, जिनमें 7 महिलाएं और 6 पुरुष शामिल हैं। विधानसभा चुनावों में मिली हार के बाद एमएनएस के लिए यह चुनाव बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस बार बीएमसी चुनावों में राजनीतिक समीकरण पूरी तरह बदल गए हैं और राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे का गठबंधन चुनावों में कड़ी टक्कर का कारण बनेगा। राज ठाकरे के शिवसेना छोड़ने के 20 साल बाद दोनों ने गठबंधन किया है। यह ऐतिहासिक पुनर्मिलन पूरे देश का ध्यान मुंबई नगर निगम चुनावों की ओर खींचेगा।

दक्षिण में नेताओं के बयान से बढ़ी सियासी सरगर्मी

शिवकुमार व टीवीके प्रमुख के बोल पर बवाल

एआईडीएमके ने एक्टर विजय पर कसा तंज

» कर्नाटक में सीएम के मुद्दे पर फिर रार

» तमिलनाडु में विस चुनाव 26 पर नजर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। दक्षिण भारत में सियासी सरगर्मी बढ़ती जा रही है। खासकर कर्नाटक व तमिलनाडु आजकल चर्चा में है। कर्नाटक में सीएम बदलने को लेकर बार-बार माहौल गरमाता है फिर कांग्रेस आलाकमान दखल के बाद शांत हो जाता है। वहीं तमिलनाडु में 2026 में विस चुनाव हैं। वहां सियासी पार्टियां तैयारी में जुटीं हैं। पर सुर्खियों अभिनेता विजय की राजनीतिक पार्टी है। समय-समय पर डीमके व एआईडीएमके उन पर प्रहार करने को मौका नहीं छोड़ती हैं।

कर्नाटक में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के बीच सत्ता संघर्ष गहरा गया है। कांग्रेस के आधे कार्यकाल के बाद शिवकुमार ने सत्ता स्थायी नहीं होती का संदेश देकर अप्रत्यक्ष रूप से सिद्धारमैया पर कटाक्ष किया है, जो 2023 के कथित सत्ता-साझाकरण समझौते की अटकलों को फिर से हवा दे रहा है और कर्नाटक की राजनीतिक खींचतान को उजागर करता है। वहीं एआईएडीएमके नेता सेल्लूर राजू ने टीवीके प्रमुख विजय पर तंज कसते हुए कहा कि उन्हें उम्मीद है कि विजय का हाल कमल हासन जैसा न हो, जिन्होंने एक सीट के लिए डीएमके से गठबंधन किया था। राजू ने विजय की जनसभाओं में भीड़ को उनके अभिनय स्टारडम का परिणाम बताया, यह रेखांकित करते हुए कि विजय राजनीति में नए हैं और उन्होंने जनता के लिए कुछ खास नहीं किया है, जबकि आगामी तमिलनाडु विधानसभा चुनावों में एआईएडीएमके के नेतृत्व वाला गठबंधन ही विजयी होगा।

भीड़ के इकट्ठा होने का मतलब जीत नहीं

विजय के इस बयान पर कि विधानसभा चुनाव का मुकाबला सिर्फ उनकी पार्टी और डीएमके के बीच है, एआईडीएमके नेता ने जवाब देते हुए कहा कि जमीनी स्तर पर उनकी उपस्थिति का फैसला सिर्फ जनता ही कर सकती है। उन्होंने कहा कि विजय की रैली में भीड़ का इकट्ठा होना स्वाभाविक है क्योंकि वह एक पेशेवर अभिनेता हैं, जिसका अर्थ यह है कि अगर अभिनेता लगातार तीन बार लोगों से मिलने आते हैं तो भीड़ कम हो सकती है।

कोई भी व्यक्ति या राजनीतिक दल स्थायी रूप से सत्ता में नहीं रहता : शिवकुमार

कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने कहा कि कोई भी व्यक्ति या राजनीतिक दल स्थायी रूप से सत्ता में नहीं रहता। यह टिप्पणी मुख्यमंत्री सिद्धारमैया पर एक अप्रत्यक्ष कटाक्ष थी, जो दोनों नेताओं के बीच चल रही नेतृत्व की खींचतान के बीच सामने आई। केपीसीसी कार्यालय स्थित भारत जोड़ो भवन में कांग्रेस स्थापना दिवस कार्यक्रम में बोलते हुए शिवकुमार ने कहा कि इतिहास गवाह है कि अंततः सबसे शक्तिशाली भी पतन की ओर अग्रसर होते हैं। उन्होंने कहा, सम्राट भी गुमनामी में खो गए हैं। विश्व को जीतने वाला सिकंदर महान अब नहीं रहा। सद्दाम हुसैन को सुरंग में छिपना पड़ा था। भाजपा समेत अन्य लोगों के साथ भी ऐसा ही होगा।

टीवीके प्रमुख विजय का हाल कमल हासन जैसा न हो जाए : सेल्लूर राजू

तमिलनाडु में आगामी विधानसभा चुनावों से पहले, अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुन्नेत्र कजगम (एआईडीएमके) के वरिष्ठ नेता सेल्लूर राजू ने तमिलगा वेट्री कजगम के अभिनेता विजय पर कटाक्ष करते हुए कहा कि उन्हें उम्मीद है कि विजय का हाल कमल हासन जैसा न हो, जिन्होंने सिर्फ एक सीट के लिए सत्ताधारी DMK के साथ

गठबंधन किया था। राजू ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा, कई अभिनेताओं ने राजनीतिक दल बनाए हैं। कमल हासन ने भी भ्रष्टाचार से लड़ने का दावा करते हुए एक पार्टी शुरू की थी, लेकिन आज उन्होंने एक सीट के लिए डीएमके के साथ गठबंधन कर लिया है। मुझे उम्मीद है कि विजय का हाल भी ऐसा न हो।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से मिले डिप्टी सीएम

पिछले सप्ताह शिवकुमार ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के आवास का दौरा किया, जिसके बाद उन्होंने कहा, मैं सिर्फ मंच पर बैठकर भाषण नहीं देता था मैंने पार्टी में हर काम किया है। इन टिप्पणियों को सिद्धारमैया पर कटाक्ष के रूप में भी देखा गया। 20 नवंबर को सरकार के पांच वर्षीय कार्यकाल का आधा समय पूरा होने के बाद सत्ताधारी कांग्रेस के भीतर आंतरिक बहस तेज हो गई है। नेतृत्व परिवर्तन की अटकलें 2023 में कांग्रेस के सत्ता में आने पर दोनों नेताओं के बीच हुए सत्ता-साझाकरण समझौते से जुड़ी हुई हैं।

वर्तमान प्रशासन का एकजुट टीम के रूप में कार्य करने का दावा

सिद्धारमैया ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि वे कर्नाटक के मुख्यमंत्री के रूप में अपना पूरा कार्यकाल जारी रखेंगे। ऐसी खबरें हैं कि सिद्धारमैया और शिवकुमार के बीच मुख्यमंत्री का कार्यकाल बराबर-बराबर बांटने का समझौता हो सकता है। हालांकि पार्टी या नेताओं में से किसी ने भी इसकी पुष्टि नहीं की है, लेकिन शिवकुमार ने हाल ही में बिना कोई विवरण दिए एक गुप्त समझौते की ओर इशारा किया है। हालांकि, शिवकुमार ने मतभेद की खबरों का खंडन करते हुए कहा कि कांग्रेस उच्च कमान द्वारा दी गई स्वतंत्रता के तहत वर्तमान प्रशासन एक एकजुट टीम के रूप में कार्य कर रहा है। जब उनसे सीधे तौर पर पूछा गया कि क्या वे पूरे पांच साल के कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री बनने की आकांक्षा रखते हैं, तो शिवकुमार ने कहा कि वे खुद को मुख्य रूप से एक पार्टी कार्यकर्ता के रूप में देखते हैं, न कि केवल सत्ता और पद की चाह रखने वाले व्यक्ति के रूप में। दोनों नेताओं ने उच्च कमान से संभावित सत्ता परिवर्तन को लेकर जारी भ्रम को समाप्त करने का आग्रह किया था, और शेष कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री कौन होगा, इस अनिश्चितता से हो रहे नुकसान का हवाला दिया था।

सब कुछ जनता तय करेगी

राजू ने कहा कि हम वास्तव में मैदान में हैं या नहीं, यह जनता खुद तय करेगी। आगामी चुनाव में एआईएडीएमके के नेतृत्व वाला गठबंधन विजयी होगा। मुझे विजय की हर बात का जवाब देना जरूरी नहीं लगता, जो कल ही राजनीति में आए हैं। अगर वह कॉमेडियन वदिवेलु को साथ लेकर भी जनसभा करते हैं, तो अकेले विजय की सभा से कहीं ज्यादा भीड़ जमा होगी। अगर वह अभिनेत्री नयनतारा को भी प्रचार में लाते हैं, तो भी लोग बड़ी संख्या में आएंगे। जब कोई अभिनेता बोलता है, तो स्वाभाविक रूप से भीड़ जमा हो जाती है। अभिनेता विजय के बहुत बड़े प्रशंसक हैं। उन्होंने आगे कहा कि दो दिन पहले मलेशिया में आयोजित एक ऑडियो लॉन्च कार्यक्रम में, अभिनेता विजय ने अपने प्रशंसकों से पूछा कि क्या उन्हें सिनेमा में काम करना जारी रखना चाहिए या नहीं। प्रशंसकों ने जवाब दिया कि उन्हें काम करते रहना चाहिए, और विजय ने कथित तौर पर कहा, देखते हैं। लोग शायद विजय को देखने के लिए ही इकट्ठा हों। लेकिन अगर विजय लगातार तीन बार लोगों से मिलने आते हैं, तो हम देखेंगे कि वास्तव में कितनी भीड़ जुटती है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा टीवीके के साथ गठबंधन करने की अटकलों पर, एआईएडीएमके ने कहा कि यह उनका अपना निर्णय है। हालांकि, सावधानी बरतते हुए राजू ने कहा कि विजय ने न तो चुनाव लड़ा है और न ही जनता के लिए कुछ किया है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

सुप्रीम फैसले से अरावली पर्वतमाला फिर होगी गुलजार

अरावली पर्वतमाला केस में सुप्रीम कोर्ट ने पुनर्विचार कर अपने ही आदेश पर रोक लगाकर इस पहाड़ के कराह को कम करने में मदद की है। शीर्ष अदालत का सरकारों को भी सख्त हिदायत देकर आम जनता को राहत देने वाला फै सला है। जो फैसला दिया है, वह यह उम्मीद जगाने वाला है कि पूर्व आदेश की सारी विसंगतियां अब दूर हो जाएंगी। कोर्ट ने इस संवेदनशील मुद्दे की व्यापक और समग्र समीक्षा के लिए एक नई उच्चस्तरीय समिति बनाने के लिए कहा है। इस समिति में अरावली क्षेत्र, पर्यावरण संरक्षण, भूगर्भ और खनन से जुड़े विशेषज्ञों को शामिल किया जाएगा। अरावली पर्वतमाला और इससे पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के नष्ट होने का जो खतरा जनमानस के मन मस्तिष्क पर मंडरा रहा था, वह भी दूर हो जाएगा यह उम्मीद की जानी चाहिए। पिछले सवा महीने से छात्र, आमजन, नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, वैज्ञानिक, पर्यावरणविद् और पर्यावरणप्रेमी सभी अरावली की नई परिभाषा के विरोध में सड़कों पर उतर आए थे।

ऐसा इसलिए हुआ था कि सुप्रीम कोर्ट ने संबंधित कमेटी और भारतीय वन पर्यावरण मंत्रालय की सिफारिशों को स्वीकार कर केवल सौ मीटर से ऊंची पहाडि?यों को ही अरावली पर्वतमाला का हिस्सा मानने की परिभाषा दे दी थी।सब जानते हैं कि अरावली पर्वतमालाएं पारिस्थितिकी संतुलन में अहम भूमिका निभाती रहीं है। पर्वतमाला का अंग मानी जाने वाली 1.6 लाख पहाडि?यों में डेढ़ लाख से ज्यादा पहाड़ियां कम ऊंची हैं। ऐसे में सवाल सिर्फ इन पहाड़ियों की ऊंचाई तय करने का ही नहीं, बल्कि उन तमाम खतरों से जुड़ा था, जो अरावली की नई परिभाषा लागू करने से सामने आने वाले थे। अब जबकि अरावली पर्वतमाला से जुड़े चार राज्य ही नहीं, बल्कि देश के हर हिस्से में आवाज बुलंद हुई तो कोर्ट ने अपने पूर्व आदेश पर स्थगन, खनन पर रोक के साथ एक और उच्चस्तरीय समिति गठित करने का फैसला सुनाया है। प्रकृति अपना संतुलन खोने लग जाए तो यह मानव जीवन के लिए बड़े संकट का कारण बन जाता है। अरावली की पहाड़ियों को जैव विविधता की रीढ़ कहा जा सकता है। समूचा अरावली क्षेत्र वन्यजीवों की आवाजाही वाला भी है। ऐसे में यह भी समझा जा सकता है कि खनन और अन्य मानवीय गतिविधियों को अनुमति वन्यजीवों के लिए भी खतरे की घंटी बन सकती थी। आरोप तो यह भी लगाए जा रहे हैं कि पिछली समिति ने केवल अरावली से जुड़े वैज्ञानिक और वास्तविक तथ्यों की बल्कि जनभावना की भी अनदेखी की। जाहिर है कि पहले ही कदम पर सब कुछ अच्छी तरह देखभाल कर रिपोर्ट दी जाती और आमजन की चिंताओं के समाधान की व्यवस्था की जाती तो न विरोध की नौबत आती और न ही तनावपूर्ण हालात बनते।

“ सरकारों को भी अपना रवैया बदलना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि अरावली में खनन की गतिविधियां प्रतिबंधित होने से राजस्व का नुकसान हो रहा है और रोजगार भी प्रभावित हो रहे हैं, लेकिन राजस्व से ज्यादा अरावली जीवन से जुड़ा मुद्दा है और जीवन से जुड़े मुद्दों पर समझौता करना आत्मघाती ही होगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

भाजपा के लिए अब चुनौतीपूर्ण होगा बीएमसी चुनाव

हिहिहिहि

उद्धव और राज ठाकरे के पुनर्मिलन का मतलब पारिवारिक विवाद का अंत नहीं है, बल्कि यह राजनीति, चुनावी गणित और संगठनात्मक बदलावों से जुड़ा महत्वपूर्ण घटनाक्रम है। भाजपा, जो शिवसेना के आंतरिक विभाजन से लाभ उठाकर महाराष्ट्र में अपनी स्थिति मजबूत कर रही थी, अब इस घटनाक्रम से अपनी रणनीति में अनिश्चितता का सामना कर सकती है। इस पुनर्मिलन से भाजपा के लिए चुनावी खेल और जटिल हो सकता है। 'मराठी अस्मिता' की राजनीति की वापसी भाजपा के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बन गई है। शिवसेना ने हमेशा मराठी गौरव और हिंदुत्व का मिलाजुला दृष्टिकोण पेश किया। जब राज ठाकरे ने एमएनएस बनाई और उद्धव ने शिवसेना का नेतृत्व किया तो यह एकाधिकार बिखर गया। इस बिखराव का फायदा भाजपा को मिला, जिसने मुंबई और अन्य शहरी इलाकों में अपनी पकड़ मजबूत की और खुद को एक अनुशासित, राष्ट्रीय पार्टी के रूप में प्रस्तुत किया।

अब, जब उद्धव और राज ठाकरे दोनों एकजुटता का संदेश दे रहे हैं, तो भाजपा को एक पुनर्जीवित नैरेटिव का सामना करना पड़ रहा है, जो मराठी पहचान और गौरव को ठाकरे परिवार के पास वापस लाने की कोशिश करता है। हालांकि, तुरंत वोटों का स्थानांतरण दिखाई न दे, लेकिन यह नैरेटिव भाजपा के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। भाजपा को उन क्षेत्रों में अपने राजनीतिक आधार को मजबूती से बनाए रखने के लिए भावनात्मक लाभ के लिए संघर्ष करना पड़ेगा, जहां स्थानीय प्रतीक और अस्मिता की राजनीति नीतियों से कहीं ज्यादा प्रभावी होती है। बीएमसी पर ठाकरे परिवार की मजबूत पकड़ रही है। भाजपा के लिए इसे अपने पक्ष में करना अहम था ताकि वह शिवसेना के जमीनी नेटवर्क को कमजोर कर सके और मुंबई में खुद को स्वाभाविक शासक के रूप में स्थापित कर सके। अब जब ठाकरे खेमे का पुनर्मिलन हो रहा है तो उनका उद्देश्य वोटों का बंटवारा रोकना है, जो पहले भाजपा के फायदे में था। हालांकि, भाजपा के पास मजबूत संगठन और संसाधन हैं, लेकिन अब यह लड़ाई पहले से ज्यादा कठिन हो सकती है।

शरद पवार की एनसीपी ने उद्धव ठाकरे की शिवसेना और राज ठाकरे की एमएनएस के साथ मिलकर 15 जनवरी को होने वाले बीएमसी चुनावों में भाग लेने का निर्णय लिया है। पवार की योजना कांग्रेस को भी गठबंधन में शामिल करने की है, ताकि कांग्रेस मुंबई में अलग-थलग न पड़े। यदि कांग्रेस

जुड़ती है तो गठबंधन की ताकत और नेतृत्व संतुलन बढ़ जाएगा, जो भाजपा के लिए चुनौती होगी। बीएमसी में भाजपा की हार उसकी शहरी राजनीतिक पकड़ को कमजोर कर सत्तारूढ़ गठबंधन में असंतोष बढ़ा सकती है, खासकर एकनाथ शिंदे गुट में। अगर कांग्रेस उद्धव-एमएनएस गठबंधन से बाहर रहती है तो यह स्थिति बीएमसी चुनाव में बदल सकती है। कांग्रेस के पास मुस्लिम बहुल इलाकों, दक्षिण मुंबई और झुग्गी बस्तियों में असर है। उसके न होने से वोटों का अलग-अलग तरीके से उपयोग हो सकता है, जिससे ठाकरे गठबंधन की एकजुटता कमजोर हो सकती है। हालांकि, एनसीपी के साथ गठबंधन से ताकत बढ़ती दिखती है, लेकिन कांग्रेस के बिना वार्ड-स्तर पर निर्णायक वोट ट्रांसफर रुक सकता है। ऐसे में भाजपा को वोट विभाजन का फायदा मिल सकता है, जो करीबी मुकाबलों में परिणाम बदल सकते हैं। यह पुनर्मिलन इस बात को दर्शाता है कि राजनीति केवल टूट-फूट और जोड़-तोड़ पर लंबे समय तक नहीं चल सकती। भाजपा का महाराष्ट्र मॉडल मुख्य रूप से विरोधियों को तोड़ने, गुटों को जोड़ने और क्षेत्रीय नेतृत्व को कमजोर करने पर केंद्रित था, जिससे उसे अल्पकालिक लाभ मिला। हालांकि, इससे यह धारणा भी बनी कि जनादेश का पुनर्गठन नैतिक सहमति से नहीं, बल्कि जोड़-तोड़ से हो रहा है। ठाकरे परिवार का पुन: एकजुट होना इस रणनीति के खिलाफ एक प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। इस समय भाजपा के पास राष्ट्रीय नेतृत्व, कल्याणकारी योजनाएं, शहरी मध्यमवर्ग का समर्थन और अनुशासित चुनावी मशीनरी—ये सभी उसकी प्रमुख ताकतें हैं। दूसरी ओर, उद्धव और राज ठाकरे के सामने संगठनात्मक कमजोरी, पुरानी असहमति और नेतृत्व शैलियों के टकराव जैसी चुनौतियां हैं। राजनीति सिर्फ आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि यह गति, धारणा और मनोवैज्ञानिक माहौल का भी सवाल है।

भाजपा नेताओं को बार-बार यह कहना पड़ रहा है कि पुनर्मिलन का 'कोई असर नहीं' पड़ेगा— यह अपने आप में एक प्रकार की रक्षात्मकता को दर्शाता है। यदि ठाकरे मुंबई में वैकल्पिक शहरी नेतृत्व के रूप में अपनी विश्वसनीयता स्थापित कर पाते हैं, तो भाजपा का मनपसंद नैरेटिव चुनौती में पड़ सकता है।

संकल्प सिद्धि हेतु तारीख ही नहीं मन भी बदलना जरूरी

हिहिहिहिहि

जिस प्रकार एक कुशल सारथी लगाम को कसकर घोड़ों को सही मार्ग पर ले जाता है उसी प्रकार हमें भी अपने शुभ संकल्पों से अपने जीवन की दिशा तय करनी होगी। हमें याद रखना चाहिए कि संकल्प और विकल्प एक म्यान में दो तलवारों की तरह से हैं। इसलिए नववर्ष में ऐसे संकल्प लें, जिनमें पीछे हटने का कोई मार्ग ही न हो। संकल्प का अडिग रहना ही वास्तविक नववर्ष है।

सही मायने में जीवन में बड़े बदलाव लाने के लिए न तो नये दिन और नये साल की जरूरत होती है, बल्कि अटूट संकल्प की जरूरत होती है। जब हम संकल्प के किंतु-परंतुओं से हटकर एकाग्र होते हैं तो संकल्प फलीभूत होते हैं। जरूरत इस बात की होती है कि हम दृढ़निश्चयी बनें। यह भी जरूरी नहीं है कि बदलाव नये साल की शुरुआत में ही कुछ ही दिनों में हासिल हो जाएगा। लक्ष्य पाने की प्रक्रिया को अनवरत धीरे-धीरे अपने शरीर व मन को उसके अनुरूप ढालकर भी पूरा किया जा सकता है। निश्चय ही आज हम बीत रहे साल के उस पड़ाव पर खड़े हैं, जहां एक तरफ बीते साल की खट्टी-मीठी यादें हैं तो दूसरी तरफ नये साल को लेकर की गई तमाम नई उम्मीदें हैं। सिर्फ दो ही दिन की तो बात है, कैलेंडर की तारीख़ बदल जाएगी और साथ ही डायरी के पन्ने भी।

लेकिन यहां सबसे बड़ा सवाल उठता है कि क्या हम भी बदल पाएंगे। क्या समस्याओं के समाधान के लिए हमारे पुराने वही घिसेपिटे दृष्टिकोण रहेंगे, जिनसे हम अपने जीवन को बेहतर न बना पाए। हर साल 31 दिसंबर की रात, हम उत्साह के आवेश में स्वयं से कई वादे कर डालते हैं जैसे रोज़ सुबह योग करेंगे, गुस्सा नहीं करेंगे, सोशल मीडिया से दूरी बनाएगे आदि-आदि। लेकिन शोध बताते हैं कि नए साल पर अधिकांश लोगों द्वारा लिए गए संकल्प जनवरी के दूसरे शुक्रवार आने तक टूट जाते हैं। यही कारण है कि जनवरी माह के इस दूसरे शुक्रवार को 'क्विटर्स डे' यानी हार मान लेने वालों का दिन भी कहा जाता है। आखिर ऐसा क्यों होता है कि जिस परिवर्तन का संकल्प हम इतने उत्साह से लेते हैं, वह दस दिन भी नहीं टिक पाता? यह श्लोक इस संसार में यात्रा कर रहे हम सभी के लिए एक अद्भुत रूपक है। श्लोक बताता है कि शरीर रथ है, इंद्रिया घोड़े हैं। मन लगाम और बुद्धि सारथी है। आत्मा यात्री है। रथ की दिशा सारथी और लगाम तय करते हैं। रथ का पूरा नियंत्रण इन्ही दोनों के हाथ में होता है। इसी प्रकार मानव जीवन की दिशा बुद्धि और मन तय करते हैं।

अगर सारथी यानी बुद्धि द्वारा लगाम अर्थात् मन को नियंत्रित न किया जाए तो घोड़े यानी इन्द्रियां बेलगाम हो जाती हैं। नियंत्रण में नहीं रहती। तो संकल्प के टूटने का जो यह असली कारण इसी 'सारथी' और 'लगाम' के रिश्ते में है। बुद्धि रूपी सारथी द्वारा मन रूपी लगाम को कसकर पकड़ना ही संकल्प है। जब हम नववर्ष पर कोई संकल्प लेते हैं, तो वह हमारी 'बुद्धि' का निर्णय होता है। लेकिन यदि हमने मन रूपी लगाम को ढीला छोड़ दिया तो इंद्रियां रूपी घोड़े बेकाबू हो जाएंगे और रथ को गलत दिशा में ले जाएंगे।

इसलिए संकल्प तभी सिद्ध होता है जब सारथी यानी बुद्धि सचेत हो और उसने मन लगाम को कसकर साधा हुआ हो। इसलिए संकल्प करते समय मन की लगाम को ढीला नहीं छोड़ना चाहिए। जैसे ही मन कमजोर पड़ा, संकल्प तुरंत टूट जाता है और फिर कोई विकल्प जन्म ले लेता है। दरअसल, संकल्प इसलिए टूटते हैं, क्योंकि हमारे पास विकल्प होते हैं। अगर संकल्प में कोई विकल्प न हो, तो कामों का सिद्ध होना तय है। इसलिए संकल्प में पीछे हटने का रास्ता बंद कर दिया जाना चाहिए। ऐसा ही कुछ यजुर्वेद रुद्राष्टाध्यायी में वर्णित सूत्र के श्लोक की पंक्ति 'तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु' में कहा गया है। इस श्लोक में प्रार्थना की गई है कि हमारा मन शुभ संकल्पों वाला हो। शुभ संकल्पों से ही मन को साधा जा सकता है क्योंकि यदि मन सध गया तो परिस्थितियां अपने आप सध जायेंगी। मन की इसी शक्ति को और अधिक गहराई से समझाया है, पश्चिम में योग के जनक माने जाने वाले परमहंस योगानंद जी ने।

वह कहते हैं—'प्रत्येक वस्तु का सृजन मन द्वारा होता है। अत: आप इसे केवल शुभ सृजन के लिए ही निर्देशित करें। यदि क्रियात्मक इच्छाशक्ति के साथ आप किसी विचार को पकड़े रहते हैं तो वह अंत में साकार रूप धारण कर लेता है। जब आप अपनी इच्छाशक्ति को सदैव रचनात्मक उद्देश्यों के लिए प्रयोग करने के योग्य हो जाते हैं तो आप अपने भाग्य के नियंत्रक बन जाते हैं।' तो इस बार, जब हम 31 दिसंबर की रात घड़ी की सुइयों को मिलते हुए देखें तो नए वर्ष का स्वागत जश्न मनाने, आतिशबाजी करने और 'हैप्पी न्यू ईयर' कहने जैसी औपचारिकताएं अवश्य करें, पर अपने भीतर के सारथी को भी जगाएं। जिस प्रकार एक कुशल सारथी लगाम को कसकर घोड़ों को सही मार्ग पर ले जाता है उसी प्रकार हमें भी अपने शुभ संकल्पों से अपने जीवन की दिशा तय करनी होगी। हमें याद रखना चाहिए कि संकल्प और विकल्प एक म्यान में दो तलवारों की तरह से हैं। इसलिए नववर्ष में ऐसे संकल्प लें, जिनमें पीछे हटने का कोई मार्ग ही न हो। संकल्प का अडिग रहना ही वास्तविक नववर्ष है।

सर्दियों में ये छोटी गलतियां ट्रिगर कर सकती हैं अस्थमा

सर्दियों का मौसम अस्थमा के मरीजों के लिए अक्सर एक बड़ी चुनौती लेकर आता है। इस मौसम में अस्थमा के अटैक का जोखिम कई गुना बढ़ जाता है। इसका मुख्य कारण ठंडी और रूखी हवा है, जो सांस की नलियों को सिकोड़ देती है और उनमें सूजन पैदा करती है। मगर इसके साथ ही हमारी दैनिक दिनचर्या की कुछ छोटी-छोटी लापरवाहियां और गलतियां भी अस्थमा को ट्रिगर करने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। अस्थमा के मरीजों में सांस की नली पहले से ही संवेदनशील होती है। ऐसे में किसी भी ट्रिगर का हल्का सा संपर्क भी गंभीर प्रतिक्रिया पैदा कर सकता है। इस समस्या को गंभीरता से लेना इसलिए जरूरी है, क्योंकि अनियंत्रित अस्थमा फेफड़ों को स्थायी नुकसान भी पहुंचा सकता है। इन खतरनाक आदतों को पहचानना और उन्हें तुरंत सुधारना सर्दियों में अस्थमा को नियंत्रण में रखने का सबसे प्रभावी तरीका है।

अचानक ठंडा या गर्म हवा का संपर्क

अक्सर देखा गया है कि अचानक तापमान में बदलाव (जैसे गर्म कमरे से सीधे ठंडी हवा में बाहर निकलना) सांस की नलियों को संकुचित कर देता है, जिससे अस्थमा का अटैक आ सकता है। इसके अलावा बहुत गर्म पानी से नहा कर और फिर तुरंत ठंडी हवा में आना भी नसों पर दबाव डालता है। इसलिए ध्यान रखें कि ठंड में बाहर निकलते समय मुंह और नाक को स्कार्फ या मास्क से ढकना जरूरी है।

प्रदूषण और संक्रमण से बचाव में लापरवाही

सर्दियों में वायु प्रदूषण अस्थमा का सबसे बड़ा ट्रिगर है। वातावरण के अधिक एक्यूआई में बिना मास्क के घूमना या घर के अंदर धूपबत्ती, अगरबत्ती या मच्छर कॉइल जलाना फेफड़ों में सीधे सूजन पैदा करता है। इसके अलावा वायरल संक्रमण (जैसे सर्दी, फ्लू) भी अस्थमा को बिगाड़ते हैं। लापरवाही से बचाव न करने पर संक्रमण अस्थमा को ट्रिगर कर देता है।

दवा के सेवन में अनियमितता

दवाओं के सेवन में लापरवाही करना सबसे गंभीर गलती है। अक्सर ऐसा होता है कि अस्थमा के मरीज जब अच्छा महसूस कर रहे होते हैं तो नियमित रूप से निवारक इन्हेलर का उपयोग करना छोड़ देते हैं। नियमित दवा फेफड़ों की सूजन को नियंत्रित रखती है। दवा को छोड़ देने पर फेफड़ों की संवेदनशीलता बढ़ जाती है और ठंड या प्रदूषण का हल्का ट्रिगर भी गंभीर अटैक को जन्म दे सकता है।

पानी की कमी

अक्सर देखा गया है कि सर्दियों में पानी कम पीने से डिहाइड्रेशन होता है, जिससे सांस की नली में जमा बलगम और कफ गाढ़ा हो जाता है। यह गाढ़ा बलगम नलियों को जाम कर सकता है। इसलिए रोजाना नियमित शारीरिक गतिविधि (जैसे घर के अंदर योग या वॉक) न करने से फेफड़ों की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए घर के अंदर हल्का व्यायाम करने से फेफड़े स्वस्थ बने रहते हैं।

हंसना मना है

दादी को गीता पढ़ते देख पोते ने अपनी मां से पूछा, मां दादी कौन सी परीक्षा की तैयारी कर रही हैं? मां : बेटा ये फाइनल ईयर की तैयारी कर रही हैं?

लड़का- जरा मेरी आंखों में देखो, क्या नजर आता है, सच-सच बताना, लड़की- मुझे इनमें प्यार नजर आता है, लड़का (गुस्से में)- ज्यादा बात मत बना, मेरी आंख में मच्छर चला गया है.. गौर से देख और निकाल इसे..

एक बार एक कलेक्टर, एक एसपी, एक मंत्री और एक शिक्षाकर्मी बैठे बातें कर रहे थे। कलेक्टर: हम तो इलाके के मालिक होते हैं। जिससे जो मर्ज़ी करवा लें। एसपी: हम जिसे चाहे अंदर करके ठोक दें। हमारा भी बड़ा रौब होता है। मंत्री: हमारा तो जलवा है बॉस। हम चाहे कुछ भी करें, कोई माई का लाल कुछ नहीं बोल सकता। शिक्षाकर्मी: हमारा तो जी कोई रौब नहीं होता। सारा दिन बच्चों को मुर्गा बना के कूटते हैं। आगे सालों की मर्ज़ी, कलेक्टर बनें, एसपी बनें, या नेता।

संता पिंकी से-मुझे तुम्हें एक बात बोलनी है। पिंकी-बोलो बाबा, शर्मा क्यों रहे हो? संता-मेरे साथ चाय पे चलेगी? पिंकी-अरे नहीं बाबा चाय गर्म होती है, मेरे हाथ जल गए तो...

कहानी | गौरैया और बंदर

एक बार की बात है, एक जंगल के किसी घने पेड़ पर एक गौरैया का जोड़ा रहता था। वो उस पेड़ पर अपना घोंसला बनाकर गुजर-बसर करते थे। दोनों खुशी-खुशी अपना जीवन बीता रहे थे। फिर आया सर्दियों का मौसम, इस बार बहुत ही कड़ाके की ठंड पड़ने लगी। ठंड से बचने के लिए एक दिन कुछ बंदर उस पेड़ के नीचे ठिठुरते हुए पहुंचे। तेज ठंडी हवाओं से सभी बंदर कांप रहे थे और बहुत ही परेशान थे। पेड़ के नीचे बैठने के बाद वो आपस में बात करने लगे कि काश कहीं से आग सेंकने को मिल जाती तो ठंड दूर हो जाती। उसी बीच एक बंदर की नजर पास पड़ी सूखी पत्तियों पर पड़ी। उसने दूसरे बंदरों से कहा, चलो इन सूखी पत्तियों को इकट्ठा करके जलाते हैं। उन बंदरों ने पत्तियों को एक जगह इकट्ठा किया और उन्हें जलाने का उपाय करने लगे। ये सब पेड़ पर बैठी गौरैया देख रही थी। ये सब देखकर उससे रहा नहीं गया और वो बंदरों से बोल पड़ी, तुम लोग कौन हो? देखने में तो तुम आदमियों की तरह लग रहे हो, हाथ-पैर भी हैं, तुम अपना घर बनाकर क्यों नहीं रहते? गौरेया की बात सुनकर ठंड से कांप रहे बंदर चिढ़ गए और बोले, तुम अपना काम करो, हमारे काम में पड़ने की जरूरत नहीं है। इतना कहने के बाद वो फिर आग जलाने के बारे में सोचने लगे और अलग-अलग तरीके अपनाने लगे। इतने में बंदरों की नजर एक जुगनू पर पड़ी। वो चिल्लाने लगा, देखो ऊपर हवा में चिंगारी है, इसे पकड़कर आग जलाते हैं। यह सुनते ही सारे बंदर उसे पकड़ने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाने लगे। ये देख चिड़िया फिर बोल पड़ी, यह जुगनू है, इससे आग नहीं सुलगेगी। तुम लोग दो पत्थरों को घिसकर आग जला सकते हो। बंदरों ने चिड़िया की बात को अनसुना कर दिया। कई कोशिश के बाद उन्होंने जुगनू को पकड़ लिया और फिर उससे आग जलाने की कोशिश करने लगे, पर वो इस काम में कामयाब नहीं हो पाए और जुगनू उड़ गया। इससे बंदर निराश हो गए। इतने में फिर से गौरेया बोल उठी, आप लोग मेरी बात मानिए, पत्थर रगड़कर आप आग जला सकते हैं। इतने में एक गुस्साए हुए बंदर से रहा न गया और उसने पेड़ पर चढ़कर गौरेया के घोसले को तोड़ दिया। यह देख चिड़िया दुखी हो गई और डर कर रोने लगी। इसके बाद वो उस पेड़ से उड़कर कहीं और चली गई।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

लाभ के अवसर हाथ आएंगे। शत्रु परेशान करेंगे। हानि नहीं पहुंचा पाएंगे। चिंता तथा तनाव रहेंगे। फालतू खर्च होगा। कुसंगति से बचें। चोट व रोग से बचें। विवाद न करें।

वृषभ

यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। बकाया वसूली होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। विवाद न करें। नेत्र पीड़ा की संभावना। कुछ लाभ। यात्रा के योग टलेंगे।

मिथुन

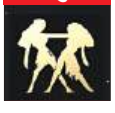

कार्यप्रणाली में सुधार होगा। योजना फलीभूत होगी। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। यात्रा के योग बनेंगे। लाभ होगा। राज्य से परेशानी हो सकती है।

कर्क

राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय बढ़ेगी। हानि-लाभ का वातावरण बनेगा। पराक्रम बढ़ेगा। विजय मिलेगी, गर्व न करें।

सिंह

चोट, चोरी व विवाद आदि से हानि संभव है। व्यवसाय ठीक चलेगा। जल्दबाजी न करें। कष्ट होंगे। खर्च बढ़ेंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। धनागम के अवसर बनेंगे।

कन्या

कोर्ट व कचहरी के कार्य बनेंगे। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। धन प्राप्ति सुगम होगी। हानि, भय, कष्ट का वातावरण बनेगा। कुछ लाभ के आसार दिखेंगे।

तुला

संपत्ति के कार्य लाभ देंगे। थकान महसूस होगी। रोजगार में वृद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। कष्टों में वृद्धि के योग हैं। कुछ नए कार्य की संभावना सिद्ध होगी।

वृश्चिक

रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। स्वादिष्ट भोजन का आनंद मिलेगा। व्यवसाय मनोनुकूल लाभ होगा। रोग घेरेंगे। चिंताएं बढ़ेंगी। शत्रु शांत होंगे। लाभ होगा।

धनु

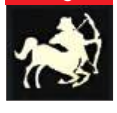

दौड़-धूप अधिक होगी। बुरी सूचना मिल सकती है। विवाद न करें। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। धनलाभ के अवसर प्राप्त होंगे। अकारण भय व्याप्त होगा।

मकर

मेहनत का फल मिलेगा। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। घर-बाहर पूछ-परख बनी रहेगी। मातृपक्ष से परेशानी होगी। दुर्घटना की संभावना। धनागम के अवसर बढ़ेंगे।

कुम्भ

भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। शत्रु शांत होंगे। कष्ट-भय की संभावना, अस्वस्थता, आलस्य का अनुभव करेंगे।

मीन

यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। अप्रत्याशित लाभ होगा। प्रसन्नता रहेगी। प्रमाद न करें। शुभ समाचार की आशा बंधेगी। शत्रु षड्यंत्र रचेंगे। नम्रता बनाए रखें।

बॉलीवुड | मन की बात

महिलाओं पर बनी फिजिकल कॉमेडी करती है असहज : चित्रांगदा सिंह

अक्षय कुमार की मल्टीस्टारर कॉमेडी फिल्म 'हाउसफुल 5' की महिला किरदारों को अजब तरह से दिखाने को लेकर काफी आलोचनाएं हुईं। फिल्म में महिला किरदार को सिर्फ एक ऑब्जेक्ट के तौर पर दिखाया गया था और उनके कई भद्दे सीन भी थे। कई लोगों का कहना था कि फिल्म में दिखाए गए चुटकुले ज्यादातर महिलाओं के शरीर पर ही टिप्पणियां थीं। इन आलोचनाओं पर अब फिल्म का हिस्सा रहीं अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह ने प्रतिक्रिया दी है। चित्रांगदा सिंह ने फिल्म की आलोचनाओं को लेकर कहा कि जब लोगों की प्रतिक्रियाएं आनी शुरू हुई तो उन्होंने उन पर गौर किया। एक्ट्रेस ने बताया कि जब आप स्क्रिप्ट सुनते हैं, तो आपको शॉट ब्रेकडाउन नहीं बताया जाता। आप सिर्फ उतना ही कल्पना कर पाते हैं, जितना स्क्रिप्ट में लिखा होता है। इसके अलावा किसी सीन को पर्दे पर कैसे दिखाया जाए, यह निर्देशक ही तय करता है। आगे महिलाओं की भूमिकाओं को लेकर उन्होंने कहा कि महिलाओं को अक्सर मजबूत भूमिकाएं मिलने से पहले ग्लैमरस भूमिकाओं में खुद को साबित करना पड़ता है। हालांकि, मैं इनमें से किसी भी बात को सही ठहराने की कोशिश नहीं कर रही हूं। लेकिन मुझे लगता है कि हर अभिनेता का अपने अभिनय पर एक सीमित नियंत्रण होता है। हालांकि, कभी-कभी महिलाओं से जुड़ी फिजिकल कॉमेडी देखना थोड़ा अनकंफर्टेबल लगता है। कॉमेडी को पेचीदा बताते हुए चित्रांगदा ने कहा कि कभी-कभी चुटकुले लोगों को हंसाते हैं और वे हंसते हैं। कभी-कभी नहीं हंसते। जब चुटकुले असरदार नहीं होते, तभी लोग आलोचना करने लगते हैं। जिम कैरी और एडी मर्फी जैसे अभिनेताओं की फिल्मों में भी बोल्ड फिजिकल कॉमेडी थी और लोगों ने उन्हें पसंद किया। ऐसे सीन पहले भी हुआ करते थे।'

टीवी के बाद अब बड़े पर्दे पर धूम मचाएंगी ईशा मालवीय

ईशा मालवीय को उनके करियर में सबसे ज्यादा पॉपुलैरिटी रियलिटी शोज की वजह से मिली। अब वो बड़े पर्दे पर कदम रखने के लिए तैयार हैं। बिग बॉस 17 फेम इस हसीना ने सोशल मीडिया पर पोस्टर शेयर कर पंजाबी सिनेमा में अपनी एंट्री पर मुहर लगा दी है।

बता दें ईशा की फिल्म का नाम इश्कां दे लेखे है, जिसमें वो पंजाबी सिंगर और एक्टर गुरनाम भुल्लर के संग रोमांस करती हुई दिखाई देंगी। सोशल मीडिया पर दोनों ने एक पोस्ट शेयर कर कंफर्म किया कि उनकी ये रोमांटिक फिल्म 6 मार्च 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

इश्कां दे लेखे एक लव स्टोरी है, जिसे मनवीर बराड़ ने निर्देशित किया है और जस्सी लोहका ने लिखा है। रिपोर्ट के अनुसार फिल्म में ईशा और गुरनाम को जसनीत और समर की भूमिका में देखा जाएगा। फिल्म की रिलीज डेट अनाउंस करने के साथ-साथ दोनों ने स्मार्ट तो मैं बचपन से ही हूं गाने पर वीडियो बनाकर शेयर किया और कैप्शन में लिखा,समझी पगली समर और जसनीत।

मालूम हो ईशा मालवीय मध्य प्रदेश के होशंगाबाद की रहने वाली हैं, उन्होंने छोटी सी उम्र में ही एक्टिंग शुरू कर दी थी। एक्ट्रेस ने डांस की ट्रेनिंग ले रखी है। बता दें महज 3 साल की उम्र में ही ईशा ने डांस सीखना शुरू कर दिया था।उसके बाद उन्होंने बूगी वूगी, डांस इंडिया डांस और डांस प्लस जैसे कई डांस रिएलिटी शोज के लिए ऑडिशन दिए थे। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद, ईशा ने इंजीनियरिंग करने की प्लानिगं की थी। हालांकि, उनके करियर में सबसे बड़ा मोड़ तब आयाजह ड्रीमियाटा प्रोडक्शन हाउस ने उनसे संपर्क किया और उन्हें टेलीविजन शो उड़ारियां में जैस्मिन की भूमिका निभाने का ऑफर दिया। हालांकि, एक्ट्रेस की पॉपुलैरिटी सबसे ज्यादा बिग बॉस 17 से बढ़ी। इस शो के दौरान वो अपने एक्स बॉयफ्रेंड अभिषेक कुमार और समर्थ जुरेल संग लव ट्राइएंगल को लेकर चर्चा में रहीं।

दूसरी शादी पर बोलीं मलाइका अरोड़ा

अगर मेरी जिंदगी में कोई दस्तक देता है, तो मैं इसे स्वीकार करूंगी

मलाइका अरोड़ा और अरबाज खान एक समय पर बॉलीवुड इंडस्ट्री के पावर कपल थे। दोनों की केमिस्ट्री चर्चा में रहती थी। मगर फिर शादी के कुछ सालों बाद उनके रिश्ते में दरार आ गई और दोनों तलाक लेकर अलग हो गए। मलाइका और अरबाज के तलाक से फैंस समेत इंडस्ट्री के लोगों को भी झटका लगा था। अब मलाइका ने अपने डिवोर्स पर चुप्पी तोड़ी है। उन्होंने बताया कि तलाक के बाद उन्हें काफी गलत तरीके से जज किया गया था।

एक्ट्रेस बोलीं- मैंने काफी जजमेंट और ट्रोलिंग का सामना किया। सिर्फ लोगों ने ही नहीं, बल्कि मेरे परिवार और दोस्तों ने भी मुझे खरी-खोटी सुनाई थी। उस वक्त मेरे फैसलों पर सवाल उठाए गए थे। लेकिन मुझे खुशी है कि मैं अपने फैसले पर डटी रही। मुझे आज कोई पछतावा नहीं है। उस वक्त मुझे आइडिया भी नहीं था कि मेरे साथ आगे क्या होगा। मुझे नहीं पता था कि मेरे लिए आगे क्या लिखा है। लेकिन मुझे ये बात पता थी कि मुझे मेरी जिंदगी में उस रिश्ते से निकलने की जरूरत है।

मलाइका ने ये भी कहा कि वो अभी भी शादी में यकीन रखती हैं। एक्ट्रेस बोलीं- मैं शादी में यकीन रखती हूं। लेकिन इसका ये मतलब नहीं है कि ये मेरे लिए ही बनी है। अगर होती भी है तो अच्छी बात है, लेकिन मैं शादी के पीछे नहीं भाग रही। मैं खुद में बहुत संतुष्ट हूं। मेरी शादी हुई थी। फिर मैंने इससे मूव ऑन कर लिया। मैं रिश्तों में रह चुकी हूं। पर मैं हताश नहीं हूं। मैं आज भी अपनी जिंदगी से प्यार करती हूं। मैं प्यार के आइडिया से प्यार करती हूं। मुझे प्यार करना और प्यार बांटना पसंद है। मैं प्यार के लिए पूरी तरह से ओपन हूं, लेकिन मैं इसे तलाश नहीं रही हूं। अगर यह नेचुरली हो जाता है और अगर यह मेरी जिंदगी में दस्तक देता है, तो मैं इसे स्वीकार करूंगी।

मलाइका ने आगे बताया कि अरबाज खान संग शादी के वक्त वो सिर्फ 25 साल की थीं। एक्ट्रेस ने लोगों को सलाह दी कि छोटी उम्र में शादी न करें। एक्ट्रेस ने सलाह देते हुए कहा कि पहले जिंदगी को खुलकर जिएं, एक्सपीरियंस कर लें उसके बाद ही शादी करने का फैसला करें। शादी से पहले फाइनेंशियली और इमोशनली इंडीपेंड जरूर हो जाएं।

अजब-गजब | नागपुर नहीं, इस शहर को कहा जाता है संतरों का शहर!

यहां पेड़ों पर लदे रहते हैं नारंगी, नहीं तोड़ता कोई

भारत में नागपुर को 'संतरा शहर' कहा जाता है, जो मीठे, रसीले संतरे के लिए मशहूर है। लेकिन स्पेन का वालेंसिया शहर इस मामले में पूरी तरह अलग है। यहां की सडकें, चौक और पार्क संतरे के पेड़ों से भरे रहते हैं। सड़कों पर हजारों पेड़ है जिन पर सर्दियों में चमकते नारंगी फल लटके रहते हैं। लेकिन हैरानी की बात ये है कि कोई भी इन फलों को तोड़कर नहीं खाता। आखिर क्यों? सजावट के लिए लगाए जाते हैं पेड़।

दरअसल, ये संतरे मीठे नहीं, बल्कि बेहद कड़वे और खट्टे होते हैं। वालेंसिया में करीब 8,000 से 16,000 तक सजावटी संतरे के पेड़ ये Citrus aurantium यानी बिटर ओरेंज हैं, जिन्हें Sevillian या नारंजो अमार्गो भी कहते हैं। ये पेड़ 10वीं सदी में अरबों (मूरिश) द्वारा स्पेन लाए गए थे। शुरू में इन्हें महलों, मस्जिदों और आंगनों में सजावट के लिए लगाया गया क्योंकि ये सदाबहार होते हैं, सालभर हरे रहते हैं, छाया देते हैं और वसंत में अजहार नामक सफेद फूल खिलते हैं, जिनकी खुशबू पूरे शहर में फैल जाती है। ये खुशबू इतनी दिव्य होती है कि लोग इसे 'खुली हवा वाली बाग' कहते हैं। 19वीं सदी के अंत से इन्हें शहर की सड़कों पर बड़े पैमाने पर लगाया गया था।

ये पेड़ बेहद मजबूत होते हैं। इन्हें कम पानी, कम देखभाल चाहिए होती है। साथ ही ये सूखा सहन कर लेते हैं और शहरी प्रदूषण में भी अच्छे से उगते हैं। गर्मियों में छाया देते हैं और सर्दियों में रंगीन फल और वसंत में परफ्यूम जैसी खुशबू देते हैं। ये सब मिलाकर शहर की खूबसूरती और पहचान बन गए हैं। ये पेड़ अब 'जीवित फर्नीचर' हैं। सजावट, इतिहास और शहर की आत्मा का हिस्सा हैं। लेकिन इसके फल मीठे वालेंसिया संतरे (जो जूस और निर्यात के लिए मशहूर हैं) नहीं हैं। ये कड़वे, ज्यादा एसिडिक, मोटी छिलके वाले और सूखे होते हैं। इसका स्वाद ऐसा होता है कि सीधे खाने पर मुंह सिकुड़ जाए। कई जगहों पर कहा जाता है कि ये शहर की गंदगी और प्रदूषण सोख लेते हैं, इसलिए सुरक्षित भी नहीं है। हालांकि मुख्य वजह उनका प्राकृतिक कड़वापन है। हर सर्दी में शहर की काउंसिल विशेष मशीनों से पेड़ हिलाकर फल इकट्ठा करती है। ये काम मजेदार लगता है। ट्रैक्टर और मशीनें सड़कों पर घूमती हैं, फल नीचे गिरते हैं। इकट्ठे फल साफ-सफाई के लिए उठाए जाते हैं (क्योंकि सड़क पर गिरे फल फिसलन पैदा करते हैं)। फिर इन्हें औद्योगिक इस्तेमाल में भेजा जाता है। मार्मलेड (खासकर ब्रिटेन में), परफ्यूम, एसेंशियल ऑयल, लिकर, साबुन या इको-फ्रेंडली क्लीनर बनाने के लिए इनका इस्तेमाल होता है। कुछ को कम्पोस्ट बनाकर खेती में खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। ये एक सर्कुलर और सस्टेनेबल सिस्टम है। वालेंसिया यूरोप का सबसे बड़ा संतरा उत्पादक क्षेत्र है, लेकिन शहर के पेड़ सिर्फ सजावट के लिए हैं। मीठे संतरे बाहर के बागों से आते हैं। ये कड़वे संतरे शहर की संस्कृति, इतिहास और पर्यावरण का प्रतीक हैं।

बेहद खूबसूरत दिखता है धरती का नर्क! जरा सी लापरवाही ले सकती है जान

अगर कोई जगह धरती पर 'नर्क' जैसी लगती है तो वो है इथियोपिया का डानाकिल डिप्रेशन। यह अफ्रीका का सबसे निचला इलाका है जो समुद्र तल से 125 मीटर नीचे है। साथ ही ये दुनिया का सबसे गर्म बसा हुआ स्थान है, जहां औसत सालाना तापमान 34-35एष्ट रहता है। गर्मियों में टेम्प्रेस्चर 50एष्ट से ऊपर चला जाता है। वइस जगह को धरती का मंगल ग्रह भी कहा जाता है। कई लोग इसे धरती का नर्क कहते हैं। यहां जहरीली गैसें, एसिड पूल और लगातार सक्रिय ज्वालामुखी, सब इंसान के लिए चुनौती है। फिर भी एडवेंचर प्रेमी दुनिया भर से यहां पहुंचते हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि जहां जिंदा रहना मुश्किल है आखिर ऐसी जगह पर लोग क्यों जाते हैं। ये जगह धरती की नहीं लगती है। ऐसा लगता है कि यह जगह 'अन्य ग्रह' जैसी है। रंग-बिरंगे सल्फर पूल, चमकता लावा लेक और अनंत सफेद नमक मैदान, इस जगह को बेहद खूबसूरत बना देता है। डानाकिल डिप्रेशन अफार ट्राएंगल का हिस्सा है, जहां तीन टेक्टॉनिक प्लेट्स (अफ्रीकी, अरेबियन और सोमाली) अलग हो रही हैं। इससे लगातार ज्वालामुखी गतिविधि, भूकंप और हाइड्रोथर्मल फीचर्स बनते हैं। यहां तीन मुख्य स्पॉट हैं जो पर्यटकों को लुभाते हैं वडालोल के सल्फर पूल यहां नीले, पीले, हरे और नारंगी रंग के एसिड पूल हैं, जो सल्फर, कॉपर और आयरन ऑक्साइड से बने हैं। ये पूल बेहद खतरनाक हैं। पानी 50एष्ट से गर्म, एसिडिक और जहरीला होता है। अगर गिरे तो जान जा सकती है। लेकिन दूर से देखने पर ये 'मार्स' या 'अन्य ग्रह' जैसे लगते हैं। **वएर्टा अले ज्वालामुखी:** दुनिया के सिर्फ 8 स्थायी लावा लेक में से एक है। रात में लावा लाल-नारंगी चमकता है, जो देखने वालों को मंत्रमुग्ध कर देता है। यहां रात गुजारने के लिए कैम्प लगता है। सबसे खास बात कि यहां कोई होटल नहीं है। सिर्फ स्टार्स के नीचे आप रात बिता सकते हैं।

वीबी-जी राम जी पर नहीं थम रहा सियासी संग्राम

केंद्र सरकार गरीबों से भोजन छीनने के लिए अधिनियम लाई: भगवंत मान

» पंजाब के लोग केंद्रीय नेताओं को उनके गांवों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। वीबी-जी राम जी कानून पर सियासी संग्राम थम नहीं रहा है। कांग्रेस व आप का भाजपा सरकार पर वार जारी है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार ने गरीबों से भोजन छीनने के लिए वीबी-जी राम जी कानून पारित किया है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार वंचित लोगों के अधिकारों पर डाका नहीं डालने देगी। मान ने नए 'विकसित भारत-रोजगार गारंटी आजीविका मिशन-ग्रामीण' (वीबी-जी राम जी) विधेयक को 14 घंटे के अंदर संसद में पारित कराने की कोशिशों को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा और कहा कि इस अधिनियम ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) की आत्मा को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

पंजाब में आप की सरकार ने हाल ही में संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान पारित वीबी-जी राम जी अधिनियम का विरोध करने के लिए मंगलवार को विधानसभा का विशेष सत्र आहूत किया। वीबी-जी राम जी अधिनियम ने कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार के कार्यकाल में पारित किए गए मनरेगा की जगह ली है।

आप व कांग्रेस का भाजपा पर प्रहार

मान ने सत्र के दौरान कहा कि नए अधिनियम का उद्देश्य दलितों, महिलाओं और सबसे गरीब परिवारों से भोजन, रोजगार व सम्मान छीनना है। उन्होंने केंद्र सरकार को जनविरोधी नीतियों को अपनाने के प्रति आगाह किया और कहा कि ऐसा करने पर पंजाब के लोग केंद्रीय नेताओं को उनके गांवों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देंगे। उन्होंने कहा, हम किसी भी हद तक संघर्ष करेंगे। हम गरीबों के अधिकारों पर डाका डाले जाने को बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने कहा मनरेगा को पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने सावधानीपूर्वक तैयार किया था। यह वर्षों की चर्चा के बाद पेश किया गया था। वहीं, वीबी-जी राम जी अधिनियम को संसद में कुछ ही घंटों में पारित कर दिया गया।

मनरेगा से गांधी का नाम हटाने के विरोध में दिग्विजय करेंगे पदयात्रा

सीहोर। केंद्र सरकार द्वारा मनरेगा योजना का नाम बदलकर वीबी-जी रामजी किए जाने के फैसले ने मध्य प्रदेश की राजनीति में भूचाल ला दिया है। इस फैसले के खिलाफ कांग्रेस अब सड़क पर उतरने जा रही है। पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने ऐलान किया है कि वे 5 जनवरी से केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के गृह जिले सीहोर से पदयात्रा शुरू करेंगे। यह यात्रा केवल नाम बदलने का विरोध नहीं बल्कि गांधी के विचारों और गरिमा की रक्षा का आंदोलन होगी। दिग्विजय ने कहा कि यह लड़ाई किसी पार्टी की नहीं, बल्कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आत्मा की लड़ाई है। सरकार योजनाओं से गांधी का नाम मिटाना चाहती है, यह देश के इतिहास और आत्मा पर हमला है। उन्होंने बताया कि पदयात्रा सीहोर जिले की किसी ग्राम पंचायत से प्रारंभ होगी, ताकि ग्रामीण भारत की आवाज सीधे दिल्ली तक पहुंचे। यह वही ग्रामीण भारत है, जिसके लिए मनरेगा योजना बनी थी और जिसने लाखों गरीब परिवारों को रोज़गार और सम्मान दिया। कांग्रेस का आरोप है कि मनरेगा का नाम बदलना कोई प्रशासनिक फैसला नहीं, बल्कि वैचारिक हमला है। महात्मा गांधी का नाम हटाकर सरकार उस इतिहास को मिटाना चाहती है, जिसने देश को आज़ादी दिलाई और गरीबों को अधिकार दिए। लोस में इस बदलाव से जुड़ा बिल पास होते ही कांग्रेस ने इसे गांधी विरोधी कदम बताया।

कर्नाटक के डिप्टी सीएम के बयान पर घमासान

» शिवकुमार ने कहा था- हमें केरलवासी की जरूरत नहीं

» भाजपा ने पूछा- क्या प्रियंका गांधी सहमत हैं?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने बेंगलुरु में कोगिलू विध्वंस अभियान पर केरल के मुख्यमंत्री पिनारयी विजयन की आलोचना के जवाब में कहा कि हमें किसी केरलवासी की ज़रूरत नहीं है, जिससे एक बड़ा राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है। भाजपा ने इस टिप्पणी को केरल विरोधी और मलयाली विरोधी करार देते हुए कांग्रेस नेतृत्व से स्पष्टीकरण मांगा, जिससे कांग्रेस और वामपंथी दलों के बीच की अंदरूनी कलह उजागर हुई।

विवाद तब शुरू हुआ जब एक पत्रकार ने शिवकुमार से केरल के मुख्यमंत्री पिनारयी विजयन द्वारा विध्वंस की आलोचना के बारे में पूछा। विजयन ने इस कार्रवाई को अल्पसंख्यक-विरोधी आक्रामक राजनीति बताया था और इसकी तुलना बुलडोजर राज से करते हुए आरोप लगाया था कि मुस्लिम निवासियों को निशाना बनाया जा रहा है। इस मामले में केरल की भूमिका पर पूछे गए एक सवाल पर प्रतिक्रिया देते हुए शिवकुमार ने कहा कि हमें किसी केरलवासी की ज़रूरत नहीं है। हमारे मुख्यमंत्री वहां हैं, उन्हें अपना काम करने दीजिए। इस टिप्पणी पर तुरंत तीखी प्रतिक्रिया हुई और भाजपा ने इसे केरल विरोधी बयान करार दिया। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने सवाल उठाया कि क्या केरल में कांग्रेस नेतृत्व शिवकुमार की इस टिप्पणी से सहमत है। उन्होंने एक पोस्ट में कहा कि पिनारयी विजयन पर हमला करने की कोशिश में दिया गया यह बयान केरल का अपमान है। उन्होंने यह भी पूछा कि क्या केरल से सांसद और वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा इस टिप्पणी से सहमत हैं। पूनावाला ने कहा कि वामपंथी और कांग्रेस के बीच की लड़ाई अब इस हद तक बढ़ गई है कि शिवकुमार खुलेआम केरल विरोधी और मलयाली विरोधी बयान दे रहे हैं। उन्होंने कहा है कि हमें केरलवासियों की जरूरत नहीं है। क्या केरल कांग्रेस इस बयान से सहमत है?

अब इंसाफ के लिए 24 घंटे खुलेगी अदालत

» सीजेआई सूर्यकांत का ऐतिहासिक फैसला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत ने सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट की सुनवाई पर बड़ा फैसला लिया है। उनका कहना है कि लीगल इमरजेंसी में कोई भी व्यक्ति किसी भी समय अदालतों का दरवाजा खटखटा सकता है। सीजेआई सूर्यकांत के अनुसार, जांच एजेंसियों के द्वारा गिरफ्तारी की धमकी दी जाने की स्थिति में अपने मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए आधी रात को भी सुनवाई की मांग की जा सकती है।

जस्टिस सूर्यकांत का कहना है, मैं प्रयास कर रहा हूं कि सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय जनता के लिए हमेशा उपलब्ध रहें। न्यायालय की कार्यवाही स्थगित होने के बाद भी व्यक्ति लीगल इमरजेंसी में कोर्ट पहुंच सके। सूर्यकांत ने कहा कि न्यायालयों में भारी संख्या में याचिकाएं लंबित पड़ी हैं, जिनके निपटारे के लिए अधिक से अधिक संवैधानिक पीठ का गठन करने की जरूरत है। इन याचिकाओं में एसआईआर जैसे मुद्दे भी शामिल हैं। बिहार के बाद 11 राज्यों में एसआईआर प्रक्रिया चल रही है, जिसे अदालत में चुनौती दी गई है। सूर्यकांत के अनुसार, सबरीमाला मंदिर में हर उम्र की महिला को प्रवेश करने की अनुमति देने वाले सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ भी याचिका दायर हुई है। यह मामला धार्मिक स्वतंत्रता और महिला अधिकारों के बीच टकराव का है, जिसके लिए नौ सदस्यीय पीठ बनाने की जरूरत है।

रोशनी से सुरक्षित हुआ लखनऊ

» मार्ग प्रकाश विभाग ने 2025 में रचा विकास का नया इतिहास

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। वर्ष 2025 लखनऊ नगर निगम के लिए आधारभूत सुविधाओं के विस्तार और नागरिक सुरक्षा को मजबूत करने का ऐतिहासिक वर्ष साबित हुआ। महापौर सुषमा खर्कवाल एवं नगर आयुक्त गौरव कुमार के कुशल नेतृत्व में नगर निगम के मार्ग प्रकाश विभाग ने राजधानी को बेहतर, सुरक्षित और आधुनिक रोशनी से सुसज्जित करने की दिशा में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कीं। शहर की सड़कें, चौराहे, कॉलोनियां और सार्वजनिक स्थल अब रोशन लखनऊ की नई पहचान के साथ जगमगा रहे हैं। वर्ष 2025 के दौरान मार्ग प्रकाश विभाग द्वारा शहर में 142 नए विद्युत पोल स्थापित किए गए।

इसके साथ ही प्रमुख चौराहों, व्यस्त मार्गों और संवेदनशील क्षेत्रों में बेहतर प्रकाश उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 29 नए सेमी हाई मास्ट लगाए गए, जिससे रात के समय दृश्यता और सुरक्षा में उल्लेखनीय सुधार हुआ। नगर निगम द्वारा वर्ष भर में शहर के विभिन्न क्षेत्रों में 8,397 नई स्ट्रीट लाइटें स्थापित की गईं। इन लाइटों से लंबे समय से अंधेरे की समस्या झेल रहे इलाकों को राहत मिली। विशेष रूप से रिहायशी क्षेत्रों, बाजारों, मुख्य सड़कों और संपर्क मार्गों पर रोशनी बढ़ने से महिलाओं, बच्चों और राहगीरों की सुरक्षा को मजबूती मिली है।

8,397 नई स्ट्रीट लाइटों से बढ़ी रात की सुरक्षा

50,500 से अधिक लाइटों का अनुरक्षण

नगर निगम ने नई परियोजनाओं के साथ-साथ पुरानी व्यवस्था को दुरुस्त रखने पर भी विशेष ध्यान दिया। वर्ष 2025 में 50,500 से अधिक स्ट्रीट लाइटों की मरम्मत व अनुरक्षण कर उन्हें पुनः चालू कराया गया। इससे प्रकाश व्यवस्था की विश्वसनीयता बढ़ी और नागरिकों को निरंतर रोशनी की सुविधा मिल सकी। नगर निगम की यह पहल न केवल शहर की सुंदरता बढ़ाने में सहायक साबित हुई है, और यातायात सुरक्षा की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है।

भारत ने जीत के साथ किया साल का अंत

» महिला टीम ने श्रीलंका का 5-0 से किया क्लीन स्वीप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तिरुवनंतपुरम। भारतीय महिला टीम ने शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए पांचवां टी20 मुकाबला 15 रन से अपने नाम किया। भारत ने इसके साथ ही पांच मैचों की टी20 सीरीज 5-0 से अपने नाम की और श्रीलंका को क्लीन स्वीप कर दिया। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में सात विकेट पर 175 रन बनाए। जवाब में श्रीलंका की टीम निर्धारित ओवर में सात विकेट पर 160 रन ही बना सकी। श्रीलंका के लिए हसिनी परेरा और इमिशा दुलानी ने अर्धशतक लगाए, लेकिन टीम जीत हासिल नहीं कर सकी। यह पहली बार है जब भारतीय महिला टीम ने घर में 5-0 से जीत दर्ज की है।

भारत की ओर से दीप्ति शर्मा, अरुंधति रेड्डी, स्नेह राणा, वैष्णवी शर्मा, श्री चरणी और अमनजोत कौर को एक-एक सफलता मिली। वहीं भारत की शुरुआत अच्छी नहीं रही। और भारत ने पावरप्ले समाप्त होने के बाद तीसरा विकेट गंवाया। उसके बाद दीप्ति शर्मा के रूप में भारत को पांचवां झटका लगा। भारतीय पारी लड़खड़ाने के बाद कप्तान हरमनप्रीत कौर ने टीम को संभाला। हरमनप्रीत ने 35 गेंदों पर अर्धशतक लगाया जो उनके टी20 अंतरराष्ट्रीय करियर का 15वां पचासा है। हरमनप्रीत का साथ इस दौरान अमनजोत कौर ने निभाया। अमनजोत 18 गेंदों पर एक चौका और एक छक्के की मदद से 21 रन बनाकर आउट हुईं। अमनजोत और हरमनप्रीत के बीच 37 गेंदों पर 61 रनों की साझेदारी हुई। इसके बाद अरुंधति 11 गेंदों पर चार चौकों और एक छक्के की मदद से नाबाद 27 रन और स्नेह राणा छह गेंदों पर एक चौके की मदद से आठ रन बनाकर नाबाद लौटीं।

दीप्ति ने रचा इतिहास सर्वाधिक विकेट लेने वाली बनीं गेंदबाज

तिरुवनंतपुरम। भारतीय महिला टीम की अनुभवी ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा ने श्रीलंका के खिलाफ पांचवें टी20 मैच के दौरान इतिहास रच दिया है। दीप्ति शर्मा महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय में सर्वाधिक विकेट लेने वाली गेंदबाज बन गई हैं। दीप्ति ने इस मामले में ऑस्ट्रेलिया की मेगन शट को पीछे छोड़ दिया है। दीप्ति के टी20 में अब 133 मैचों में 152 विकेट हो गए हैं। दीप्ति ने पांचवें टी20 मैच में सिर्फ एक ही विकेट लिया, लेकिन ये एक विकेट उन्हें उपलब्धि हासिल कराने के लिए काफी था। दीप्ति ने निलाक्षिका सिल्वा को आउट किया जो टी20 अंतरराष्ट्रीय में उनका 152वां शिकार बनीं।

भाजपा सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा का मजाक बना दिया : जयराम रमेश

भारत-पाक युद्ध हमने रुकवाया के चीनी दावे पर भड़की कांग्रेस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा बार-बार यह दावा करने के बाद कि वाशिंगटन ने भारत और पाकिस्तान के बीच संभावित युद्ध को रोका, चीन ने भी ऑपरेशन सिंदूर के बाद चार दिनों तक चले संघर्ष के दौरान तनाव कम करने में अपनी भूमिका का दावा किया। जयराम रमेश ने एक पोस्ट में चीन के दावे पर चिंता व्यक्त की, क्योंकि बीजिंग के पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ रक्षा संबंध हैं और वह इस्लामाबाद को हथियार आपूर्ति करता है।

कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने चीन के विदेश मंत्री वांग यी द्वारा भारत-पाकिस्तान गतिरोध में मध्यस्थता करने के दावे के बाद केंद्र पर तीखा हमला करते हुए इसे नई दिल्ली की राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ मजाक बताया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा बार-बार यह दावा करने के बाद कि वाशिंगटन ने भारत और पाकिस्तान के बीच संभावित युद्ध को रोका, चीन ने भी ऑपरेशन सिंदूर के बाद चार दिनों तक चले संघर्ष के दौरान तनाव कम करने में अपनी भूमिका का दावा किया।

कांग्रेस नेता बोले- राष्ट्रपति ट्रंप पहले से ही लंबे समय से दावा करते रहे हैं

कांग्रेस नेता ने लिखा कि राष्ट्रपति ट्रंप लंबे समय से दावा करते रहे हैं कि उन्होंने 10 मई, 2025 को ऑपरेशन सिंदूर को रोकने के लिए व्यक्तिगत रूप से हस्तक्षेप किया था। उन्होंने कम से कम सात अलग-अलग देशों में विभिन्न मंचों पर 65 बार ऐसा किया है। प्रधानमंत्री ने अपने तथाकथित करीबी दोस्त द्वारा किए गए इन दावों पर कभी चुप्पी नहीं तोड़ी है। अब चीनी विदेश मंत्री ने भी ऐसा ही दावा किया है और कहा है कि चीन ने मध्यस्थता भी की थी। 4 जुलाई, 2025 को सेना उप प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल राहुल सिंह ने सार्वजनिक रूप से कहा था कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत वास्तव में चीन का सामना कर रहा था और उससे लड़ रहा था। यह देखते हुए कि चीन स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के साथ था, भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता करने के चीनी दावे चिंताजनक हैं - न केवल इसलिए कि वे सीधे तौर पर हमारे देश के लोगों को जो विश्वास दिलाया गया है, उसके विपरीत हैं, बल्कि इसलिए भी कि वे हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा का मजाक उड़ाते प्रतीत होते हैं, उन्होंने आगे कहा।

चीनी विदेश मंत्री के बयान पर पीएम मोदी स्पष्टीकरण दें

इसके अलावा, रमेश ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि उन्होंने चीन की शर्तों पर उससे बातचीत की है। उन्होंने चीनी विदेश मंत्री के बयान पर केंद्र से स्पष्टीकरण की भी मांग की। इस दावे को चीन के साथ हमारे संबंधों के संदर्भ में भी समझा जाना चाहिए। हमने उनके साथ पुनः संपर्क स्थापित करना शुरू कर दिया है - लेकिन दुर्भाग्य से, यह चीनी शर्तों पर ही हुआ है। 19 जून, 2020 को प्रधानमंत्री द्वारा चीन को क्लीन चिट देने से भारत की वार्तात्मक स्थिति काफी कमजोर हो गई है। हमारा व्यापार घाटा रिकॉर्ड ऊंचाई पर है, और हमारे अधिकांश निर्यात चीन से आयात पर निर्भर हैं। अरुणाचल प्रदेश के संबंध में चीन की उकसाने वाली कार्रवाइयां लगातार जारी हैं। ऐसे एकतरफा और शत्रुतापूर्ण संबंधों के बीच, भारत की जनता को यह स्पष्टता चाहिए कि ऑपरेशन सिंदूर को अचानक रोकने में चीन की क्या भूमिका थी।

विदेश मंत्रालय का दावा- किसी तीसरे पक्ष की भूमिका नहीं

भारत ने चीन के इस दावे को सिरे से खारिज कर दिया है कि उसने इस साल की शुरुआत में मिलिट्री टकराव के दौरान नई दिल्ली और इस्लामाबाद के बीच मध्यस्थता की थी, और दोहराया है कि सीज़फ़ायर के फैसले में कोई तीसरा पक्ष शामिल नहीं था। भारत लगातार यह कहता रहा है कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद 10 मई को हुआ सीज़फ़ायर दोनों देशों के डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशंस के बीच सीधी बातचीत के बाद हुआ था। हमने पहले ही ऐसे दावों का खंडन कर दिया है। भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय मुद्दों पर किसी तीसरे पक्ष की कोई भूमिका नहीं है। हमारा रुख पहले भी कई बार साफ किया जा चुका है कि भारत-पाकिस्तान सीज़फ़ायर पर दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच सीधे सहमति बनी थी। यह घटनाक्रम चीनी विदेश मंत्री वांग यी के डोनाल्ड ट्रंप जैसा बयान देने के बाद आया है, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि बीजिंग ने मई में भारत और पाकिस्तान के बीच टकराव सहित कई वैश्विक संघर्षों में मध्यस्थता की थी।

खालिदा जिया को अंतिम विदाई, जयशंकर भी पहुंचे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

ढाका । बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री बेगम खालिदा जिया का पार्थिव शरीर ढाका के गुलशन स्थित आवास फिरोजा पहुंचा, जहां परिवार ने उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि दी। 80 वर्ष की उम्र में निधन के बाद देश में शोक है। तीन बार प्रधानमंत्री रहीं खालिदा जिया के सम्मान में तीन दिन का राजकीय शोक घोषित है। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर अंतिम संस्कार में शामिल होने ढाका पहुंच गए हैं।

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री बेगम खालिदा जिया का पार्थिव शरीर बुधवार को ढाका के गुलशन इलाके में स्थित उनके आवास 'फिरोजा' पहुंचा। यहां परिवार के सदस्यों और करीबी रिश्तेदारों ने उनकी नमाज-ए-जनाजा से पहले अंतिम श्रद्धांजलि दी। इस बात की जानकारी बांग्लादेशी अंतरिम सरकार के मुखिया मुहम्मद यूनुस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पोस्ट करके दी। उन्होंने बताया कि खालिदा जिया का पार्थिव शरीर फिरोजा लाया गया, जहां उनके परिवार और रिश्तेदारों ने उन्हें अंतिम विदाई दी। इसी बीच भारत के विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर बुधवार को बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री बेगम खालिदा जिया के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए ढाका पहुंचे। विदेश मंत्री जयशंकर को ढाका हवाई अड्डे पर बांग्लादेश में भारत के उच्चायुक्त प्रणय वर्मा ने स्वागत किया। भारतीय दूतावास के प्रवक्ता ने इसकी पुष्टि बांग्लादेश की सरकारी समाचार एजेंसी को की। जयशंकर को लेकर आया विशेष विमान सुबह 11:30 बजे ढाका पहुंचा। एक आधिकारिक बयान में बताया गया है कि जयशंकर भारत सरकार और भारत की जनता का प्रतिनिधित्व करते हुए खालिदा जिया के अंतिम संस्कार में शामिल हो रहे हैं।

मां के पार्थिव शरीर के सामने दुआ करते नजर आएं बेटे रहमान

जब खालिदा जिया का पार्थिव शरीर गुलशन इलाके में स्थित उनके आवास 'फिरोजा' पहुंचा तब बीएनपी के कार्यकारी अध्यक्ष और खालिदा जिया के बेचे तारीक रहमान को अपनी मां को श्रद्धांजलि देते हुए देखा गया। वे हाथ में दुआ की किताब लिए शांत भाव से बैठे थे।

दोपहर दो बजे अदा की गयी नवाज-ए-जनाजा

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री बेगम खालिदा जिया की नमाज-ए-जनाजा आज दोपहर 2 बजे ढाका के माणिक मिया एवेन्यू स्थित संसद भवन (संसद भवन) के साउथ प्लाजा में अदा की गयी। जनाजे में शामिल होने के लिए बड़ी संख्या में लोग मौके पर पहुंचे और लाखों शोकाकुल लोगों के आने की खबर है। अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस समेत कई बड़े नेता और गणमान्य लोग जनाजे में शामिल हुए।

उत्तर भारत में बारिश की संभावना, और बढ़ेगी ठंड

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अगले दो से तीन दिन में भारत के मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। आईएमडी के मुताबिक पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली-एनसीआर में हल्की बारिश का अनुमान हैं। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग उत्तर भारत ने यह जानकारी दी है।

उन्होंने बताया कि इस समय उत्तर पाकिस्तान के ऊपर एक सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ बना हुआ है, जिसके प्रभाव से आने वाले दो से तीन दिनों तक मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में हल्की से मध्यम बारिश और बर्फबारी की संभावना है। खास तौर पर बुधवार को कश्मीर घाटी में कहीं-कहीं भारी बारिश या बर्फबारी भी हो सकती है। इससे पहाड़ी इलाकों में ठंड और बढ़ने के साथ-साथ जनजीवन प्रभावित होने की आशंका है। मैदानी इलाकों की बात करें तो पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान के कई हिस्सों में हल्की बारिश हो सकती है।

सबसे स्वच्छ शहर इंदौर की खुली पोल

दूषित पानी से 7 की मौत, 40 से ज़्यादा अस्पताल में भर्ती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंदौर। भारत के सबसे साफ शहर इंदौर में दूषित पीने का पानी पीने से कम से कम 7 लोगों की मौत हो गई है और 40 से ज़्यादा लोग बीमार पड़ गए हैं। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने इंदौर के भागीरथपुरा इलाके में दूषित पानी की समस्या का संज्ञान लिया है और इस लापरवाही के लिए जिम्मेदार संबंधित अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

निर्देशों पर कार्रवाई करते हुए, इंदौर कलेक्टर शिवम वर्मा ने बताया कि ज़ोनल ऑफिसर शालिग्राम सिटोले और असिस्टेंट इंजीनियर योगेश जोशी को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया गया है, जबकि इंचार्ज सब-इंजीनियर शुभम श्रीवास्तव को तत्काल प्रभाव से सेवा से बर्खास्त कर दिया गया है।

इंदौर के मेयर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि इस घटना में अब तक 7 लोगों की मौत हो चुकी है। उन्होंने कहा कि सरकारी आंकड़ा 3 है, लेकिन शहर के भागीरथपुरा इलाके में मरने वालों की असली संख्या 7 हो गई है। अधिकारियों के अनुसार, 24 दिसंबर से उल्टी और दस्त के मामले तेज़ी से बढ़ने लगे। फिलहाल 40 से ज़्यादा लोग बीमार बताए जा रहे हैं, जबकि 1000 से ज़्यादा निवासियों को अब तक मेडिकल इलाज मिल चुका है।

बीएमसी आयुक्त को हाईकोर्ट की फटकार

कोर्ट कर्मियों की चुनावी ड्यूटी लगाने से अदालत नाराज, अधिकार पर उठे सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। बॉम्बे हाईकोर्ट ने बीएमसी कमिश्नर द्वारा जारी उस चिट्ठी पर रोक लगा दी है, जिसमें कमिश्नर ने निचली अदालत के कर्मचारियों को भी चुनाव ड्यूटी के लिए रिपोर्ट करने का निर्देश दिया था। उच्च न्यायालय ने बीएमसी कमिश्नर के अदालत कर्मचारियों को चुनाव ड्यूटी पर बुलाने के अधिकार पर भी सवाल उठाया है

मुख्य न्यायाधीश जस्टिस चंद्रशेखर और जस्टिस अश्विन भोबे की पीठ ने मुख्य न्यायाधीश के आवास पर हुई विशेष सुनवाई के दौरान कहा कि बीएमसी कमिश्नर, जो जिला चुनाव अधिकारी के तौर पर भी काम कर रहे हैं, उन्हें हाईकोर्ट या निचली अदालत के स्टाफ को चुनाव ड्यूटी के लिए उनकी सेवाओं की मांग करते हुए कोई भी पत्र या संचार का अन्य कोई भी माध्यम जारी करने से रोका जाता है। पीठ ने कहा, हाईकोर्ट की

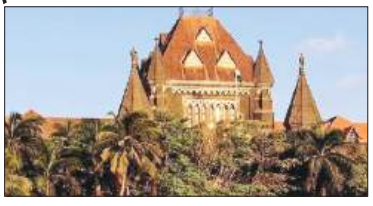

प्रशासनिक समिति ने सितंबर 2008 में फैसला किया था कि हाईकोर्ट और निचली अदालत के स्टाफ को चुनाव ड्यूटी से छूट दी जाएगी। उच्च न्यायालय ने बीएमसी कमिश्नर के पत्र पर स्वत: संज्ञान लेकर यह सुनवाई की। गौरतलब है कि जिस दिन बीएमसी कमिश्नर ने चिट्ठी जारी की, उसी दिन चीफ मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट ने बीएमसी कमिश्नर और मुंबई के कलेक्टर को सूचित किया कि हाईकोर्ट के निचली अदालतों के स्टाफ के बारे में लिए गए एक प्रशासनिक फैसले के तहत, कोर्ट स्टाफ को चुनाव ड्यूटी से छूट देने का अनुरोध किया गया है। इसके बावजूद बीएमसी कमिश्नर ने 29 दिसंबर को निचली अदालत के स्टाफ को चुनाव ड्यूटी से छूट देने का अनुरोध अस्वीकार कर दिया।

हाईकोर्ट ने कमिश्नर से मांगा हलफनामा

सुनवाई के दौरान बीएमसी की तरफ से पेश वकील कोमल पंजाबी ने कमिश्नर द्वारा जारी पत्र को वापस लेने की मांग की, लेकिन उच्च न्यायालय ने अनुरोध अस्वीकार कर दिया। हाईकोर्ट ने बीएमसी कमिश्नर को एक हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया है, जिसमें उन शक्तियों का उल्लेख करने को कहा गया है, जिनके तहत कमिश्नर ने अदालत के स्टाफ को चुनाव ड्यूटी के लिए रिपोर्ट करने का निर्देश दिया। साथ ही पीठ ने चुनाव आयोग, राज्य चुनाव आयोग और महाराष्ट्र सरकार को भी हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया है। हाईकोर्ट अब इस मामले पर 5 जनवरी को सुनवाई करेगा।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा